an>

Title: Regarding untimely death of nuclear scientists during the last decade.

श्री विनोद कुमार सोनकर (कौशाम्बी) : अध्यक्ष जी, मैं सदन के माध्यम से आप सभी का ध्यान वैज्ञानिकों की सुरक्षा की तरफ दिलाना चाहता हूं। जिन वैज्ञानिकों की बदौलत आज हम लोग उपग्रह प्रक्षेपण में आत्मनिर्भर ही नहीं बने, बल्कि दुनिया के पांच शीÂान देशों में शामिल हुए हैं। जिन वैज्ञानिकों की बदौलत आज देश की सुरक्षा सुनिश्चित है, आज वे वैज्ञानिक असुरक्षित हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि वÂान 2000 से लेकर 2013 के बीच में लगभग 77 वैज्ञानिकों की आकस्मिक मौत हो चुकी है। वÂान 2000 से 2008 तक लगभग 56 और 2008 से 2013 के मध्य लगभग 21 वैज्ञानिकों की आकस्मिक मौत हो चुकी है लेकिन पूर्ववर्ती सरकारों ने कभी ध्यान नहीं दिया। परमाणु ऊर्जा विभाग में वÂान 2009 से 2013 के बीच में दस वैज्ञानिकों ने रहस्यमय परिस्थितियों में अपना जीवन खो दिया है। 8 जून, 2009 को चलमहालिंगम 41 वÂाावय कर्नाटक के रहने वाले वरिÂठ वैज्ञानिक सुबह 9 बजे सैर पर गए और फिर कभी वापिस नहीं आए। पांच दिन बाद उनका शव काली नदी में मिला। इसी तरह वÂान 2010 में 2 वैज्ञानिकों की टाम्बे में, वÂान 2012 में राजस्थान में एक, वष्Â़ान 2013 तमिलनाडु में एक, वÂान 2011 में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के 63 वÂाावय उमानरसिह्म, न्यूक्लियर कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड के रवि खत्त्वर, 23 फरवरी 2010 को रामअय्यर, अक्टूबर 2013 में विशाखापट्नम में के.के. जोशी और अभिशिक्तम 30 सितम्बर, 2009 में दो युवा शोधकर्त्ता अंग सिंह और पार्थपद्दम, 2012 में मोहम्मद मुस्तफा की आकस्मिक मौत हो गई। मैं सदन के माध्यम से बताना चाहता हूं कि पिछले दस सालों में न जाने कितने बड़े वैज्ञानिकों को हम खो चुके हैं। माननीय गृह मंत्री जी सदन में उपस्थित हैं, मैं गृह मंत्री जी और सरकार से मांग करता हूं कि वैज्ञानिकों की सुरक्षा के लिए ठोस उपाय किए जाएं और जिन वैज्ञानिकों की आकस्मिक मृत्यु हुई है उनकी जांच कराई जाए।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र, कुंवर पष्पÂेन्द्र सिंह चंदेल, श्री सी.पी. जोशी, श्री रोड़मल नागर और श्री सुधीर गुप्ता को श्री विनोद कुमार सोनकर द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।